पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.11.2024 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9810117464 पर एस.एम.एस कर दें या 9868051444 पर googlepay कर दें। –अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-12 मार्गशीर्ष-2081 दयानन्दाब्द 201 16 नवम्बर से 30 नवम्बर 2024 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.11.2024, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

141वां महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया – अनिल आर्य

महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चले –सत्यानंद आर्य

दिल्ली, रविवार 10 नवम्बर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 141वें महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर विशाल कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार दिल्ली में किया गया। दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से भारी संख्या में लोग सम्मिलित हुए और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य जसवंत शास्त्री ने यज्ञ करवा कर किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया और लोगों के सोचने व समझने की दिशा ही बदल डाली। उन्होंने पाखंड अंधविश्वास पर सीधा प्रहार किया वह एक निर्भीक सन्यासी थे।आर्य समाज रूपी संस्था की स्थापना करके समाज के चौकीदार का काम किया। समारोह अध्यक्ष आर्य नेता सत्यानंद आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द के आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं आवश्कता उन पर चलने की है। स्वामी जी को वेदों वाला कहा जाता है उन्होंने लुप्त हुए वेदों को जर्मनी से मंगाकर उन्हें पुनर्स्थापित किया। धर्मपाल कुकरेजा ने सुन्दर आयोजन के लिए बधाई दी।

गायक कलाकार नरेंद्र आर्य सुमन, पिंकी आर्य, किरण सहगल, सुदेश आर्य, मधु खेड़ा आदि ने मधुर गीतों से उल्लासपूर्ण वातावरण बना दिया। आचार्य महेन्द्र भाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर डॉ. विवेक आर्य कि पुस्तक 'महर्षि दयानन्द को जानें' का विमोचन हुआ। प्रमुख रूप से प्रवीण आर्य गाजियाबाद, एस के छतवाल, पी एस दहिया, राणा, सुनील सहगल, अनिल कपूर, आर पी सूरी, राजीव सूरी, यशपाल आर्य, ओम सपरा, राम कुमार आर्य, धर्मपाल आर्य, देवेन्द्र भगत, अरुण आर्य, सौरभ गुप्ता, कर्नल विपिन खेड़ा, सुनीता बुगा, आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री, डालेश त्यागी, आरती खुराना, वेद प्रकाश आर्य ,वरुण कथूरिया उपस्थित थे। आर्य महिला रत्न अवार्ड से 15 कर्मठ महिलाओं को सम्मानित किया गया।

महान् व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित परम ऋषिभक्त स्वामी श्रद्धानन्द

– मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महान् व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्व आश्रम का नाम महात्मा मुंशीराम जी) (1856–1926) का जीवन एवं व्यक्तित्व कैसा था इसका अनुमान हम शायद नहीं लगा सकते। गुरुकुल के स्नातक, देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी एवं प्रसिद्ध पत्रकार पं. सत्यदेव विद्यालंकार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र लिखा है। इस पुस्तक में उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रायः सभी पक्षों पर प्रकाश डाला है। इसी पुस्तक से हम स्वामी श्रद्धानन्द जी की महानता के एक ऐसे पक्ष को प्रस्तुत कर रहे हैं जो अधिकांश जनता के सम्मुख नहीं आया है। यह पक्ष कांग्रेस के सर्वोच्च नेता पं. गोपाल कृष्ण गोखले तथा उनके परवर्ती गांधी जी के पत्रव्यवहार सहित उनके समकालीन दीनबन्धु एण्ड्रयूज आदि कुछ अन्य व्यक्तियों की सम्मतियों के द्वारा पुष्ट होता है। हम आशा करते हैं कि इस लेख से हमारे सभी पाठक बन्धु स्वामी श्रद्धानन्द जी की महानता से परिचित होकर लाभान्वित होंगे। बाद के समय में स्वामी श्रद्धानन्द जी के योगदान को भुला दिया गया। ऐसा न केवल स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ हुआ अपितु नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा सरदार पटेल आदि अनेक नेताओं के साथ भी हुआ।

पं. सत्यदेव विद्यालंकार जी लिखते हैं 'स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व के विषय में कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। फिर भी सन् 1912 (सम्वत् 1969) की एक ऐसी मनोरंजक घटना का उल्लेख यहां किया जाता है, जिससे आपके महान् व्यक्तित्व पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। सम्वत् 1969 (सन् 1912) में लाहौर के 'प्रकाश' में पाठकों से एक प्रश्न किया गया था कि उनकी दृष्टि में भारत के छः महापुरुष कौन–कौन हैं? एक हजार पांच व्यक्तियों ने उस प्रश्न का उत्तर दिया था। उन उत्तरों में दिये गये नामों के लिए प्राप्त सम्मतियों को जोड़ने पर निम्नलिखित परिणाम निकला था–श्रीयुत् गोपाल कृष्ण गोखले–762, महात्मा मुंशीराम–603, लाला लाजपतराय–533, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक–475, पं0 मदनमोहन मालवीय–475 और भीष्म पितामह दादाभाई नौरोजी–433। चार वर्ष पहिले सन् 1907 (सम्वत् 1964) में हिन्दुस्तान ने भी अपने पाठकों से इसी प्रकार का प्रश्न किया था। उसके निर्णय के अनुसार महात्मा मुंशीराम जी का सातवां नम्बर था। इससे प्रतीत होता है कि चार वर्षों में आप बहुत लोकप्रिय हो गये थे। 'प्रकाश' ने इसी सम्बन्ध में लिखा था–''महात्मा मुंशीराम जी ने अपनी चुपचाप परन्तु स्थिर लोकसेवा के कारण लोगों के हृदय पर अधिक अधिकार जमा लिया है।" यह स्पष्ट है कि आपके जीवन में आपकी लोकप्रियता इससे भी अधिक अनुपात से बढ़ती चली गई थी और बड़ी तेजी के साथ आप लोगों के हृदय पर अधिकाधिक ही अधिकार जमाते चले गये थे। इसी सम्बन्ध में एक और घटना भी बड़ी मनोरंजक है। अन्तिम परिणाम के अनुसार बिल्कुल ठीक–ठीक उत्तर देने वाले के लिए प्रकाश की ओर से 50 रुपये का इनाम रखा गया था। ऐसे ठीक–ठीक उत्तर देने वाले नौ सज्जन थे। एक छोटे से बालक से कहा गया कि उनके कार्डों को जमीन पर फैला कर उनमें से कोई एक उठा ले। उसने महात्मा जी के परम–भक्त, अनन्य–सेवक, श्रद्धासम्पन्न, कर्मशील लुधियाना–निवासी श्री लबभूराम जी नय्यड़ के नाम का कार्ड उठाया और 50 रुपये का वह इनाम आपको मिला। गुरुकुल की ओर से गुरुकुल की सेवा के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार महात्मा मुंशीराम–पदक भी आपको ही मिला था। सच्चे स्नेह और अनन्य भक्ति का यह स्वाभाविक परिणाम था।

यदि कहा जाये कि 'प्रकाश' तो आर्यसमाजी पत्र था, उसका वैसा परिणाम निकलना कोई बड़ी बात नहीं थी। महात्मा मुंशीराम जी के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में किसी प्रकार के विवाद में पड़ने के लिए यह उपयुक्त स्थान नहीं है। पिछले और अगले पृष्ठों में इस विवाद का स्वयं ही निर्णय हो गया और हो जायेगा। हां, उस महान् व्यक्तित्व के सम्बन्ध में दो–एक विशेष घटनाओं का उल्लेख करना आवश्यक है। सन् 1907 की सूरत–कांग्रेस में फूट पर 27 जनवरी 1908 को श्रीयुत (गोपाल कृष्ण) गोखले ने आपको कलकत्ता से एक पत्र में लिखा था–''मुझको यह देखकर बड़ी निराशा हुई कि आप 27 दिसम्बर 1907 को सूरत नहीं पहुंच सके, क्योंकि मैं आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक था। उन दुःखपूर्ण घटनाओं के बाद, जिनसे सूरत–कांग्रेस भंग हो गई, आप सरीखे व्यक्ति से मिलना और भी जरूरी हो गया है। घटनाओं का इस समय जो रुख है, उससे मैं अब भी विक्षिप्त हूं, और आपके साथ वर्तमान स्थिति पर विचार–विनिमय करने से मुझको जो सन्तोष प्राप्त होगा, वह दूसरी तरह नहीं हो सकता। आपको मुझसे मिलने में जो कठिनाई है, वही मुझको आपसे मिलने में है। मैं काम में बुरी तरह गुंथा हुआ हूं। मुझको नहीं मालूम कि उससे मैं कैसे छुटकारा प्राप्त करूं।" इसके बाद अपना कार्यक्रम और इंग्लैण्ड जाने के सम्बन्ध में लिखते हुए गोखले जी ने लिखा था–''इससे आपको पता लग जायेगा कि इस वर्ष भी मेरे लिए गुरुकुल आना संभव नहीं है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि गुरुकुल आने की अपनी असमर्थता के लिए जितना मुझको दुःख है, उतना शायद ही किसी और को हो।" इस पत्र से स्पष्ट है कि महात्मा जी के व्यक्तित्व से श्रीयुत गोखले कितने प्रभावित थे? वे सचमुच महात्मा जी को अपना अंतरंग साथी समझते थे और व्यवस्थापिका सभा के काम के सम्बन्ध में भी आपके साथ सलाह–मशवरा करते रहते थे। आपने 17 अप्रैल सन् 1911 के पत्र में लिखा था–''आपके पत्रों के लिए मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूं। वास्तव में मैं अपना अहोभाग्य समझता हूं कि आप मुझको अपना निजी अंतरंग मित्र समझते हैं।" फिर एक पत्र में लिखा था–''यदि आप पूना आकर हमारी सोसाइटी का अवलोकन कर सकेंगे तो हम लोगों को बड़ी प्रसन्नता होगी। यदि आप आने का निश्चय करें, जैसा कि मुझको विश्वास है कि आप जरूर करेंगे, तो पहिले सूचना दे दें, जिससे मैं आपके अनुकूल अपना कार्यक्रम बना रखूं।"

श्री गोखले के समान गांधीजी भी जिस प्रकार आप के व्यक्तित्व से प्रभावित थे, उसका एक हल्का–सा चित्र उपर्युक्त पुस्तक में पीछे दिया गया है। अहमदाबाद में सत्याग्रह–आश्रम की स्थापना करते हुए उसके सम्बन्ध में गांधी जी आपसे बराबर परामर्श करते रहे। एक पत्र में गांधी जी ने लिखा था–''आप का पत्र मुझको बल देता है। मेरे कार्य में आर्थिक त्रुटि आयेगी तब आपका स्मरण अवश्य करूंगा। ..... आश्रमवासी सब आपके आने की राह देखते हैं। अवधि बीतने पर हम सब अधीर हो जायेंगे।" इसी प्रकार एक दूसरे पत्र में लिखा था–''मेरी ये आजीजी है कि थोड़े दिनों के लिए आप अहमदाबाद को और इस आश्रम को पावन करो। आश्रमवासी आप का दर्शन कर कृतार्थ होंगे।" गांधी जी के पत्रों से मालूम होता है कि वह भी आप के साथ अपने हर कार्य के सम्बन्ध में सदा परामर्श करते रहते थे। दीनबन्धु एण्ड्रयूज का अपके प्रति जो स्वाभाविक आकर्षण था, उसका उल्लेख यथास्थान किया जा चुका है। दीनबन्धु अपने लिये आपको आतंरिक स्फूर्ति का प्रधान साधन मानते थे। मि. हावर्ट सरीखे सरकारी अधिकारी ने भी आपसे अपने विवाह के लिए विलायत से पत्र द्वारा शुभ आशीर्वाद मांगा था। विवाह के बाद विलायत से लौटने पर वह पत्नी सहित आपके समक्ष आशीर्वाद लेने के लिए ही उपस्थित हुए थे। मि. रैम्जे मैकडाल्ड आदि आप द्वारा जिस प्रकार प्रभावित हुए थे, उसको दोहराने की आवश्यकता नहीं। (श्री रैम्से मैकडाल्ड इंग्लैण्ड से गुरुकुल आये थे और महात्मा मुंशीराम जी के साथ रहे थे। उन्होंने अपने संस्मरणों में लिखा था कि यदि किसी व्यक्ति को जीवित ईसामसीह के दर्शन करने हों तो मैं उसे महात्मा मुंशीराम के दर्शन करने की सलाह दूंगा। बाद में श्री रैम्जे मैकडानल्ड ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बने थे।) आपके व्यक्तित्व की महानता को बतलाने वाली यह केवल दो–एक घटनाएं हैं। वैसे भारत के महापुरुषों में आप का चाहे कोई सा भी स्थान क्यों न रहा हो, किन्तु आम जनता और विशेषतः आर्य जगत् के तो आप हृदय–सम्राट् ही थे, जिसने आपकी अंगुली के ईशारे पर गुरुकुल के लिए तन, मन, धन न्यौछावर करने में कभी हीनता, दीनता अथवा कृपणता नहीं दिखाई और उसके भरोसे आपने गुरुकुल सरीखी असंभव जंचने वाली संस्था को इतना महान् और विशाल बना कर 'महात्मा' शब्द को वस्तुतः सार्थक कर दिखाया था।'

इस लेख को पढ़कर स्वामी श्रद्धानन्द जी की महानता के विषय में कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है। हम पाठकों को पं0 सत्यदेव विद्यालंकार जी रचित ''स्वामी श्रद्धानन्द" जीवन चरित पढ़ने की सलाह दे रहे हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन वर्ष 2018 में आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध प्रकाशक कीर्तिशेष ऋषिभक्त श्री प्रभाकरदेव आर्य जी ने अपने प्रकाशन ''हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डोनसिटी" से किया था। पुस्तक का सम्पादन सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् यशस्वी डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी ने किया है। पुस्तक में 448 पृष्ठ हैं। हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डोनसिटी का दूरभाष नं0 09414034072 / 09887452951 है। इस पर सम्पर्क कर पुस्तक प्राप्त की जा सकती है। –196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

डॉ. डी. के गर्ग की पुस्तक विमोचन व धर्मपाल कुकरेजा का अभिनन्दन

ईशान इंस्टिट्यूट नोएडा के अध्यक्ष डॉ. डी के गर्ग की पुस्तक का विमोचन करते अनिल आर्य, आचार्य यशपाल शास्त्री। द्वितीय चित्र आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल कुकरेजा का अभिनंदन करते रामकुमार आर्य, धर्मपाल आर्य व देवेंद्र भगत।

आर्य नेता सत्यानन्द आर्य का अभिनन्दन व गीत गाते हुए आर्य जन

आर्य नेता सत्यानंद आर्य का अभिनंदन करते आचार्य महेन्द्र भाई। द्वितीय चित्र संगीत संध्या में गीत गाते हुए आर्य ज़न।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 679वां वेबिनार सम्पन्न

वाल्मीकि रामायण में समाज दर्शन विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

हनुमान वानर नहीं अपितु वेदों के विद्वान थे –डॉ. रामचन्द्र (कुरुक्षेत्र)

सोमवार 21 अक्टूबर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'वाल्मीकि रामायण में समाज दर्शन' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 676 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता डॉ. रामचन्द्र (अध्यक्ष,संस्कृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने कहा कि वाल्मीकि रामायण सदियों से भारत एवं समस्त विश्व के आदर्श जीवन एवं स्वस्थ, समृद्ध एवं उन्नत समाज का उदाहरण प्रस्तुत करती है। रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का पारिवारिक,सामाजिक, प्रशासनिक एवं वैश्विक जीवन मूल्यों के सभी पक्षों में भारतीय चेतना के संवाहक के रूप में प्रकट होता है। राम केवल इसलिए आदर्श नहीं है कि वह स्वयं महान थे बल्कि उनका व्यक्तित्व इसलिए महान है कि उनके साथ में रहने वाला हर व्यक्ति भी राम की चेतना से चेतनावान हो जाता है। उन्होंने कहा कि तत्कालीन समाज आपसी प्रेम एवं सौहार्द का उदाहरण प्रस्तुत करता है। भरत का अतुलनीय भ्रातृप्रेम जिसमें वे 14 वर्ष तक खड़ाऊ को सिंहासन पर रख करके शासन करते हैं। वनवास तो राम को मिला है पर लक्ष्मण उनके साथ एक आत्मा बनकर अनुगमन करते हैं। जनक नंदिनी सीता भी राम के संघर्षों में सहगामिनी बन जाती हैं। इतिहास के पृष्ठों में ऐसा उदाहरण दूसरा प्राप्त नहीं होता। ननिहाल से लौटे भरत को जब श्रीराम के वनवास की सूचना मिली तो वह बहुत दुखी हो गए और कहा कि इसमें मेरी कोई भूमिका नहीं है जिसने भी यह दुष्कृत्य किया है उसे वह पाप लगे जो दो समय संध्या न करने वाले को लगता है या फिर जल को गंदा करने वाले को लगता है। डॉ रामचन्द्र ने कहा कि राज्याभिषेक एवं वनवास के दो भिन्न–भिन्न अवसर पर भी राम के मुख मंडल पर समता का भाव था। बाली के पास रावण के वध की शक्ति थी पर राम ने यह कहते हुए उसका वध किया कि तुम वीर तो हो पर सदाचारी नहीं हो। रावण जैसे अतुलनीय शक्तिशाली पर उन्होंने सुग्रीव एवं हनुमान जैसे वनवासियों एवं अपने उच्चतम चरित्र से ही विजय प्राप्त कर ली। हिमालय जैसे संघर्षों के बीच भी सतत मर्यादा पालन ने उन्हें साधारण राजकुमार से कोटि–कोटि भारतीय के लिए आदर्श मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम बना दिया। रामायण में माता सीता नित्य प्रति संध्या एवं यज्ञ करती थी तथा हनुमान जी भी वानर नहीं थे अपितु वे वेदों के विद्वान शास्त्रों के मर्मज्ञ एवं अत्यंत कुशल नीति वेत्ता थे। वर्तमान समय की आवश्यकता है कि वाल्मीकि रामायण का पाठ मनन और चिंतन घर–घर में होना चाहिए जिससे कि समाज में बढ़ रही विसंगतियां दूर हो सकें। मुख्य अतिथि शिक्षाविद चंद्रकांता गेरा (कानपुर) व अध्यक्ष कृष्णा पाहुजा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, सावित्री गुप्ता, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, सुधीर बंसल, कुसुम भंडारी, अनिता रेलन ने मधुर भजन सुनाए।

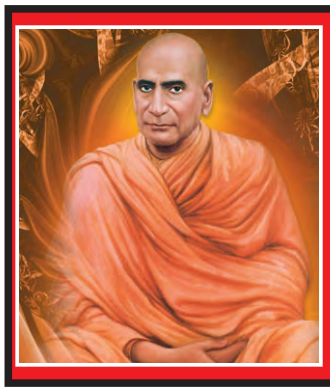

उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया, जिनके खूँ से जले थे चिरागे वतन।
आज महकते है मकबरे उनके, जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन।।
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की केन्द्र सरकार से माँग
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन
नया बाजार दिल्ली को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो

'राष्ट्रवाद और उसकी महत्ता' पर गोष्ठी सम्पन्न

सभी को राष्ट्र के प्रति निष्ठावान होना चाहिए –अतुल सहगल

मंगलवार 12 नवम्बर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'राष्ट्रवाद और उसकी महत्ता' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया ।यह करोना काल से 679 वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने वर्तमान समय में राष्ट्रवाद के विषय की चर्चा का महत्त्व बताया और यह कहा कि आजकल की परिस्थितियां इस विषय को लोक चर्चा का केंद्र बिंदु बना रही हैं। उन्होंने राष्ट्रवाद की विस्तृत परिभाषा सामने रखी स राष्ट्रवाद के मुख्य लक्षण और बिंदु प्रस्तुत करते हुए विस्तार से राष्ट्र की मौलिक परिकल्पना से लेकर राष्ट्रवाद की अवधारणा का उल्लेख किया। ऋग्वेद के 22 वें अध्याय के मन्त्र संख्या 22 का उद्धरण देते हुए आदर्श राष्ट्र के लक्षणों को विस्तार से प्रस्तुत किया। विश्व के अनेक देशों के उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार वहां राष्ट्रवाद का उदय हुआ और अनेक नव राष्ट्र बने स राष्ट्र का निर्माण किसी विशेष विचारधारा के आधार पर होता है और यही विचारधारा लोगों को एक सूत्र में बांधती है स भारत की बात करते हुए कहा कि यह देश बहुत प्राचीन काल से विश्वगुरु रहा है पर कालांतर में विचारधारा के दूषित होने से समाज का नैतिक पतन हुआ और यह राष्ट्र अपना वर्चस्व और गौरव खो कर पराधीनता में जकड़ गया स लेकिन कुछ समय बाद समाज में पुनः जाग्रति आयी और राष्ट्रवाद सुदृढ़ होने लगा स अब भारत राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर अग्रसर है और फिर से विश्वागुरु बनने की राह पर है स भारत राष्ट्र की तीव्र उन्नति के क्या क्या करना होगा। उन बातों की चर्चा की स आर्यसमाज की इस कार्य में विशेष और अग्रिम बहुत भूमिका रहेगी स हम सबको को दृढ़संकल्प से अपनी शुद्ध सनातन वैदिक विचारधारा को ही पूर्णता से स्थापित करना है स इसके लिये बड़े पुरुषार्थ की आवश्यकता है स राष्ट्रवाद की महत्ता के परिपेक्ष्य में यह भी बताया की यह व्यक्ति की भौतिक उन्नति और आध्यात्मिक उन्नति का कारक बनता है। राष्ट्रवाद के अनेक अंगों की व्याख्या करते हुए राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र भक्ति को ही प्रमुख लक्षण ठहराया स इनके होते हुए समाज का प्रत्येक गण राष्ट्र उत्थान में अपना योगदान देता है और इस प्रक्रिया में अपनी सर्वांगीण उन्नति भी करता है। आर्य नेत्री विद्ययोंतमा ने अध्यक्षता करते हुए राष्ट्र के प्रति समर्पण की बात की। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए राष्ट्र को सर्वोपरि बताया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, सुदर्शन चौधरी, प्रवीण आर्य, रचना वर्मा, मंजू आदि ने भजन सुनाए।

'भैया दूज की प्रासंगिकता' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

भाई बहन के स्नेह का प्रतीक है भैया दूज –आचार्य श्रुति सेतिया

सोमवार 4 नवम्बर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'भैया दूज की सार्थकता' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 678 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी आचार्या श्रुति सेतिया ने कहा है वैदिक संस्कृति को पर्व प्रधान संस्कृति कहा जा सकता है। इसमें जितने पर्व कल्पित किए गए हैं उतने संभवतः संसार के किसी धर्म व संस्कृति में नहीं किए गए हैं। दीपावली ओर गोवर्धन पूजा के बाद भाई–दूज का पर्व आता है। यह एक वैदिक पर्व भी कहा जा सकता है। यह पर्व भाई व बहिन के परस्पर सौहार्द एवम् प्रेमपूर्ण संबंधों को प्रकट करता है। इसका संदेश है कि भाई व बहिन को जीवन भर परस्पर स्नेह के बंधन में आबद्ध रहना चाहिए और दोनों परस्पर एक दूसरे के सुख दुख, रक्षण व पोषण का ध्यान रखें। इसके प्रतीक के रूप में बहिन भाई का तिलक करती है और अपनी शुभकामनाएं देती है। भाई अपनी सहमति देते हुए कि रक्षा व कष्ट,मुसीबत में सहायक होने का परिचय देता है। वेद में प्रमाणित एक मंत्र द्वारा बताया गया है कि कोई भी भाई अपने भाई से,कोई भी बहिन अपनी बहिन से तथा भाई बहिन भी परस्पर द्वेष कभी ना करें। सभी भाई बहिन परस्पर प्रेम आदि गुणों से युक्त होकर एक दूसरे के मंगल कल्याण की भावना वाले होकर मंगलकारी रीति से एक दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करें। यही मंगलकारी रीति ही इस पर्व का आधार है।आज की परिस्थितियों में इस पर्व का महत्व अधिक हो गया है। अतः आज भैयादूज के पर्व को मनाने में हमें इसकी महत्ता,प्रासंगिकता व उपयोगिता अनुभव होती है। भाई दूज का यह पर्व भाई बहिन के प्रेम, स्नेह, समर्पण, परस्पर रक्षा,सहयोग,सहायता, सेवा, शुभकामनाएं, आवश्यकता पढ़ने पर एक दूसरे के लिए त्याग व बलिदान का प्रतीक है। सब अपने जीवन में परस्पर प्रेम व त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करें। इसे स्थिर रखने के लिए ही भारतीय संस्कृति में इस पर्व की कल्पना को साकार रूप प्रदान किया गया है। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री उषा सूद व अध्यक्ष चन्द्र कांता आर्या ने अपने विचार व्यक्त किये।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, कमला हंस, कुसुम भंडारी, जनक अरोड़ा, संतोष धर, शशि जायसवाल, रविन्द्र गुप्ता, सुधीर बंसल, सुनीता अरोड़ा आदि के मधुर भजन हुए।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474
से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970